National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 2; May 2017; Page No. 185-186

1857 की क्रान्ति में इलाहाबाद की भूमिका

डॉ. केशरीनन्दन मिश्र

एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास), हेमवती नन्दन बहुगुण राजकीय पी.जी. कालेज, नैनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का इतिहास निरन्तर साम्राज्य विस्तार और आर्थिक लाभ प्राप्त करने का इतिहास है। 1857 ई0 के विद्रोह से पूर्व अंग्रेजों ने तीव्रता से साम्राज्य का विस्तार किया। भारत पर अंग्रेजों की राजनीतिक विजय, इस विजय द्वारा उद्भूत आर्थिक तत्वों और कार्यवाहियों एवं नए शासन द्वारा प्रवर्तित नवाचार से भारतीय समाज के जो हिस्से प्रभावित हुए, उनका संचित असंतोष 1857 के विद्रोह का करण हुआ। 1857 ई0 की क्रान्ति ने न केवल विदेशी शासन के विरूद्ध जनभावना के निश्चित रूप को प्रदर्शित किया बल्कि अपने परिवर्तनों की भी शुरूआत की । ये परिवर्तन सिर्फ नीति निर्धारण और राजनीतिक संरचना से ही संबंधित नहीं थे बल्कि जन विश्वासों, भावनाओं और ब्रिटिश शासन की प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण से भी संबंधित थे। इस क्रान्ति से ही अंग्रजी शासन के लिए विरूद्ध संगठित संघर्ष की तैयारी हो गयी। यहीं से राष्ट्रीय आन्दोलन की शुरूआत हुई जो कि अंततः 1947 ई0 में विदेशी शासन को समाप्त कर देश में आज़ादी ला सका। भारत में अन्य स्थानों की भांति इलाहाबाद में भी सन् 1857 में क्रान्ति का आगाज़ हुआ। क्रान्ति की सूचना सर्वप्रथम 12 मई 1857 ई0 को इलाहाबाद में पहुंची।

नगरवासी पहले से ही अंग्रेजों के विरूद्ध संकल्पित थे। मेवातियों ने भी भारतीय सैनिकों में विद्रोह का भाव प्रबल किया था। इलाहाबाद में उस समय कर्नल सिम्पसन के नेतृत्व में छठी रेजीमेन्ट और फिरोजपुर रेजीमेन्ट के सिख सैनिक दस्ते ही पड़ाव डाले थे। इलाहाबाद में क्रान्ति की आशंका को रोकने के लिए प्रतापगढ़ से सेना मंगा ली गई। अधिकांश अंग्रेजों ने स्वयं को किले में सुरक्षित कर लिया। किले की सुरक्षा के लिए 65 तोपची, 800 सिख तथा पैदल सैनिकों की एक टुकड़ी थी। 06 जून 1857 की रात को दारागंज में स्थित गंगा नदी पर नावों के पुल पर तैनात सैनिकों ने अंग्रेजों पर आक्रमण कर दिया। अलोपीबाग में लेफ्टिनेण्ट अलेक्जेण्डर को गोली मार दी गई। अन्य क्षेत्रों की भांति दारागंज में स्थित छठी रेजीमेण्ट ने क्रान्ति में अग्रणी भाग लिया। रेजीमेण्ट ने कचहरी व छावनियों के समीप स्थित भवनों व सरकारी कार्यालयों में आग लगा दी। किले में तैनात भारतीय सैनिकों के हथियार ले लिये गये। केवल सिख सैनिक दस्ते ही किले के प्राचीर पर सुरक्षा के लिए तैनात थे। कम समय में ही पूरे इलाहाबाद में विद्रोह की लहर फैल गयी। अंग्रेजों का आधिपत्य पूर्णतया समाप्त हो गया। कचहरी के आस पास के क्षेत्र शमसाबाद, रसूलपूर, बेलगांव, सादियाबाद, सलोरी, फतेहपुर बिछुआ, कटरा, कर्नलगंज के क्षेत्र अंग्रजों से मुक्त हो गये। पूरे नगर में क्रान्ति फैल गई। सरकारी

कोष पर भारतीयों का कब्ज़ा हो गया व कैदी रिहा किये गये। इलाहाबाद में मेवाती, शेख तथा ठाकुरों ने अधिकार स्थापित किया। शेख निजामत अशरफ, गुलाम इस्माइल, मोहम्मद हुसैन, चौधरी मीरान बख्श तथा महगांव (चायल) के मौलवी लियाकत अली ने अंगेजों के विरूद्ध आक्रमण किये। मौलवी लियाकत अली, मुगल शासक बहादुर शाह की ओर से इलाहाबाद के गवर्नर नियुक्त किये गये और क्रान्ति को नेतृत्व प्रदार किया। इसी समय अवधि के नबाब बिरजीस कद्र का घोषणा पत्र इलाहाबाद में पढ़ा गया और खुसरो बाग में स्वतंत्रता का झण्डा भी फहराया गया। अंग्रेज अधिकारियों ने अपने सुरक्षा के लिए भाग कर इलाहाबाद के किले में शरण ली किन्तु क्रान्तिकारियों ने किले पर अधिकार करने में विलम्ब कर दिया। अधिकांश विद्रोही सैनिक अपने–अपने गांव चले गये। किले में छठी रेजीमेण्ट के कुछ सैनिक ही थे। अंग्रेज अधिकारियों ने उनसे हथियार रखवा लिये थे और उन्हें किले के बाहर ही रखा। अंग्रेजों ने स्वयं को किले में सुरक्षित कर पर्याप्त रसद सामग्री की भी व्यवस्था कर ली। क्रान्तिकारियों ने यदि किले पर अधिकार स्थापित किया होता तो निश्चित ही स्थित कुछ और ही होती। किन्तु कर्नल नील ने इलाहाबाद पहुंच कर स्थित पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। अंग्रेजों ने क्रान्ति के दमन के लिए रंगून, बम्बई और मद्रास से सेना मगांकर दमन चक्र आरम्भ किया। मेरठ में क्रान्ति आरम्भ हुए एक माह भी व्यतीत नहीं हुआ था कि प्रसिद्ध नगरी वाराणसी में अमानुषिक दमन प्रारम्भ हो गया। 09 जून 1857 ई0 को वाराणसी में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया। क्रान्तिकारियों को पकड़कर फांसी पर लटका दिया गया था। भादोही के राजा उदवन्त सिंह को क्रान्तिकारियों का साथ देने के कारण फांसी की सज़ा दी गई। गोपीगंज में भी 16 जून को तीन क्रान्तिकारियों को कोर्ट मार्शल कर फांसी पर लटका दिया गया। वाराणसी के साथ–साथ इलाहाबाद व कानपुर में भी अमानुषिक अत्याचारों का कृत्य कर्नल नील के नेतृत्व में किया गया। कर्नल नील अत्यन्त क्रूर व्यक्ति था। उसका उद्देश्य क्रान्ति का दमन था। कर्नल नील 18 जून 1857 को वाराणसी में मार्शल लॉ लागू कराकर इलाहाबाद पहुंच गया। इलाहाबाद में क्रान्ति की शुरूआत हुए मात्र पांच दिन ही हुए थे कि क्रान्तिकारियों का सामना कर्नल नील से हो गया। सर्वप्रथम कर्नल नील का सामना झूंसी में गंगा पुल पर क्रांन्तिकारियों से हुआ ये क्रान्तिकारी किले पर अधिकार के लिए प्रयत्नशील थे। नील ने स्वयं माना था कि गंगा नदी पर स्थित नाव का पुल क्रान्तिकारियों के हाथों में था। कर्नल नील ने सर्वप्रथम पुल पर अधिकार स्थापित कर इलाहाबाद–वाराणसी मार्ग को सुरक्षित किया। इसके पश्चात नील ने किले पर अधिकार स्थापित कर कीडगंज पर आक्रमण कर क्रान्तिकारियों को किले में प्रवेश से रोक दिया। किले में अंग्रेजों की स्थिति सुदृढ़ होते ही नगर में भी इसका असर दिखाई देने लगा। नगर के असैनिक अधिकारियों ने क्रान्तिकारियों से मोर्चा लेना शुरू कर दिया। 14 जून 1857 को इलाहाबाद में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया। तत्कालीन मजिस्ट्रेट एवं कलेक्टर एमएच कोर्ट ने इलाहाबाद मण्डल के आयुक्त सी चेस्टर को पत्र के माध्यम से घटनाक्रम से अवगत कराया। उस समय नगर में पुलिस व सेना की संख्या बहुत कम थी। फिरोजपुर रेजीमेण्ट से सम्बन्ध एक अंग्रेज स्वयं सेवक को पुलिस भर्ती का काम सौंपा गया। दारागंज, कर्नलगंज व कटरा में अंग्रेज स्वयं सेवकों को पुलिस व मार्शल लॉ को क्रियान्वित करने का कार्य दिया गया। कर्नल नील ने मार्शल लॉ को क्रियान्वित करने का जिम्मा स्वतः लेते हुए दमनात्मक कार्य प्रारम्भ किये। उसने स्वयं लिखा कि मैं निरन्तर धावा बोल रहा हूं। यद्यपि उतना नहीं कि जितना मैं चाहता हूं, किन्तु उतना जितना कि शत्रु पसन्द नहीं करते। कर्नल नील ने दारागंज व कीडगंज के क्षेत्रों में अत्याचार किये। शमसाबाद, छावनी व यमुना के किनारे के इलाकों में आग लगा दी अधिकांश लोगों को फांसी पर चढ़ा दिया गया। दरियाबाद, सैदाबाद तथा

रसूलपुर में क्रान्तिकारियों का दमन किया गया। इंग्लैण्ड में 22 अगस्त 1857 को 'इलेस्ट्रेटेड लंदन न्यूज' ने इस अग्निकाण्ड का फोटो व समाचार भी छपा। 18 जून को इलाहाबाद में पुनः अंग्रजों का शासन स्थापित हो गया। क्रान्तिकारियों को फांसी पर लटकाया गया। चौक (इलाहाबाद) में नीम के पेड़ पर लगभग 800 व्यक्तियों को फांसी पर चढ़ाया गया। नगर के जो लोग भाग रहे थे उन्हें गोलियों से भूना गया। गांवों में भीषण अग्निकाण्ड किया गया। मौलवी लियाकत अली ने मुगल बादशाह बहादुर शाह द्वितीय को पत्र के माध्यम से कर्नल नील के दमनात्मक अत्याचारों से अवगत कराया। मौलवी लियाकत अली को भी इलाहाबाद छोड़कर कानपुर जाना पड़ा। सितम्बर 1857 तक इलाहाबाद में अंग्रेजों के दमनात्मक कार्य चलते रहे। इन अत्याचारों की भर्त्सना न केवल भारतीयों ने की बल्कि ब्रिटिश इतिहासकारों सर जॉन के, कर्नल मैलीसन, होम्स तथा चार्ल्स बाल ने भी की हैं। जार्ज कैम्प वेल ने लिखा है कि नील ने भारतीयों पर इतनी यातनाएं की जितनी की भारतवासियों ने कभी किसी के साथ नहीं की।

इस प्रकार दमनात्मक कार्यवाहियों के कारण 1857 की क्रान्ति न केवल इलाहाबाद बल्कि सम्पूर्ण भारत में समाप्त हो गयी। क्रान्ति का परिणाम यह रहा कि एक नवम्बर 1858 को ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन भारत से समाप्त कर दिया गया। अब कम्पनी के शासन के स्थान पर सीधे महारानी विक्टोरिया का शासन प्रारम्भ हुआ। महारानी का यह घोषणा पत्र भी सर्वप्रथम इलाहाबाद में ही पढ़कर सुनाया गया। घोषणा पत्र में अन्य प्रावधानों के साथ इस बात का भी उल्लेख किया गया कि सभी भारतवासियों के साथ उसी तरह का व्यवहार किया जायेगा जिस तरह का अंग्रेजों के साथ। यद्यपि यह क्रान्ति सफल न हो सकी और महारानी के इस घोषणा पत्र का असर भी अंग्रेज शासकों के कृत्यों में दिखाई नहीं दिया किन्तु विद्रोह ने 1757 से 1857 तक अर्थात् 100 वर्षों तक भारतीय जनमानस में व्याप्त आक्रोष का प्रस्फुटन किया और अंग्रेजों की दमनात्मक नीतियों के विरूद्ध संघर्ष की शुरूआत की।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि–ए.आर.देसाई।
2. हिस्ट्री ऑफ दि इण्डियन म्यूटिनी, वाल्यूम VI – सं0 कर्नल मैलीसन
3. प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की झलकियां–डा. मोतीलाल भार्गव
4. प्रयाग–अतीत, वर्तमान और भविष्य–बद्रीनारायण एवं वाई0पी0 सिंह
5. नैरेटिव ऑफ द इण्डियन स्विोल्ट्